

नौकरी की किताब

सत्र 15: अय्यूब 19:25--मैं जानता हूं कि मेरा मुक्तिदाता जीवित है

जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 15, नौकरी 19.25 है

परिचय: नौकरी 19.25 [00:23-2:02]

अध्याय 19 के मध्य में, अय्यूब के भाषण में, बिलदाद का जवाब देते हुए अय्यूब की पुस्तक में सबसे परिचित छंदों में से एक आता है। जैसा कि एनआईवी में अनुवादित है, यह कहता है, "मुझे पता है कि मेरा उद्धारकर्ता जीवित है और अंत में, वह पृथ्वी पर खड़ा होगा। और मेरी त्वचा नष्ट हो जाने के बाद भी, मेरे शरीर में, मैं भगवान को देखूंगा; मैं स्वयं देखूंगा उसे अपनी आंखों से देखो--मैं, किसी और को नहीं। मेरा दिल मेरे भीतर कितना तड़प रहा है।" तो, यहाँ क्या हो रहा है? और, निःसंदेह, ये छंद हैंडेल के मसीहा और उस अद्भुत गीत, "आई नो माई रिडीमर लाइव्स" के कारण बहुत परिचित हैं। तो, हमें इस श्लोक की व्याख्या कैसे करनी चाहिए? खैर, चलिए इसके माध्यम से काम करते हैं।

सबसे पहले, इसे अय्यूब के कई संदर्भों के संबंध में समझने की आवश्यकता है जो पहले ही सामने आ चुके हैं जहां वह अपने कानूनी मामले से संबंधित एक वकील को संदर्भित करता है। वह किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश कर रहा है जो ईश्वर के समक्ष उसका प्रतिनिधित्व कर सके, कोई ऐसा व्यक्ति जो उसका मामला उठाए, उसकी भूमिका निभाए और उसकी वकालत करे। यह एक और शब्द है जो यह सुझाव देता है। ऐसे कई शब्द हैं जिनका उपयोग अय्यूब इस स्थिति को संदर्भित करने के लिए करता है। और, निःसंदेह, यह उनमें से सिर्फ एक है। पुस्तक में कई अन्य भी हैं। वास्तव में, वे सभी किसी ऐसे व्यक्ति की एक ही तरह की भूमिका पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो अय्यूब की भूमिका निभाएगा।

अधिवक्ता = अय्यूब के रोने का मानवीकरण देखें [2:02-2:44]

अब, हमें यह प्रश्न पूछना होगा कि अय्यूब किस प्रकार के वकील की तलाश करता है, और वह उस भूमिका को भरने की अपेक्षा किससे करता है? उन्हें यह वकालत कहां से मिलने की उम्मीद है?

डीजे क्लाइन की टिप्पणी, एक उत्कृष्ट टिप्पणी, वकील को अवैयक्तिक रूप से अय्यूब की बेगुनाही की पुकार के मूर्त रूप के रूप में समझने की कोशिश करती है। वह सोचता है कि वह रोना अपने आप में खड़ा रहेगा, उस आवाज़ के बिना जिसने उसे आवाज़ दी थी, और जब वह चला जाएगा तो वही उसका वकील होगा।

वकील [गोयल] = ईश्वर या मानव सापेक्ष दृष्टिकोण [2:44-3:49]

एक दूसरा दृष्टिकोण, और एक अधिक पारंपरिक दृष्टिकोण, एक बहुत ही सामान्य दृष्टिकोण, यह है कि ईश्वर वकील है, लेकिन निस्संदेह, यह काफी समस्याग्रस्त है। मध्यस्थ किसी भी पक्ष में से एक नहीं हो सकता, विशेषकर अन्याय का आरोपी। जब उस पर ही आरोप लगाया जा रहा हो तो उसके लिए अपने खिलाफ वकील बनना कोई मायने नहीं रखता।

दूसरों ने सुझाव दिया है कि वकील की भूमिका एक मानवीय रिश्तेदार द्वारा निभाई जाएगी।

"उद्धारक" के रूप में अनुवादित हिब्रू शब्द *गोयल* है, और हिब्रू समाज के कुलों के भीतर *गोयल का एक विशेष कानूनी कार्य था*। वे ही थे जो परिवार के अधिकारों के लिए खड़े हुए थे। तो, यह विचार कि यह एक मानव रिश्तेदार होगा, उस शब्द का कुछ अर्थ देगा जिसका उपयोग किया जा रहा है, लेकिन हमें एक समस्या है। उसके सभी रिश्तेदारों ने उसे छोड़ दिया है। इसलिए, यह सोचना बहुत मुश्किल है कि वह उन रैंकों से किसी वकील की उम्मीद करेगा।

वकील [गोयल] = एलीहू दृश्य [3:49-4:14]

जब हम बाद में एलीहू के भाषण पर पहुंचते हैं, तो एलीहू खुद को वकील के रूप में पेश करता है। जैसा कि हम सीखेंगे, उसे ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जिसके पास खुद के बारे में उच्च राय है, लेकिन वह खुद को प्रोजेक्ट करता है, लेकिन उसके दिमाग में अय्यूब की तुलना में एक अलग तरह का परिणाम होता है। एलीहू पुष्टि को उस परिणाम के अंत के रूप में नहीं देखता है। तो, यह उस प्रकार का *लक्ष्य नहीं है* जिसकी अय्यूब तलाश कर रहा है।

अधिवक्ता [गोयल] = दैवीय परिषद के सदस्य [4:14-6:49]

मेरे विचार में, सबसे संभावित विकल्प यह है कि अय्यूब दैवीय परिषद की सदस्यता से एक वकील की तलाश कर रहा है। वह किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश कर रहा है जो खड़ा हो और स्वर्गीय क्षेत्र में अपना हिस्सा ले सके जहां निर्णय लिए जा रहे हैं। यह एलीहू द्वारा अय्यूब 33, छंद 23 और 24 में संदर्भित एक विकल्प है। यह एक ऐसा विकल्प भी है जिसे एलीपज ने 5:1 में और 22:2 और 3 में जल्दी ही खारिज कर दिया था, जहां एलीपज ने मूल रूप से कहा था, "गिनती मत करो उस पर। यह आपके लिए कारगर नहीं होगा।" और इससे पता चलता है कि यह एक सैद्धांतिक संभावना होगी।

22:2 और 3 के साथ, मेरे पास उसका पुनः अनुवाद है। फिर से, कुछ बहुत ही कठिन छंद, और मैं इसका अनुवाद करूंगा; फिर मैं यहां इसका बचाव नहीं कर सकता; आप इसे मेरी टिप्पणी में पाएंगे। "क्या एक बुद्धिमान मध्यस्थ ईश्वर की ओर से सेवा करने वाले मनुष्य के लिए कोई अच्छा काम कर सकता है? क्या ऐसा मध्यस्थ किसी मनुष्य को कोई लाभ पहुंचा सकता है? क्या ईश्वर अनुकूल प्रतिक्रिया देगा? जब आप स्वयं को उचित ठहराते हैं, तो क्या जब आप पूरा हिसाब देंगे तो कोई लाभ होगा आपके तरीके।" यह एलीपज का मामला है "वास्तव में यह आपको कहीं नहीं ले जाएगा।" यह वास्तव में है, और आप जानते हैं, उसे यहाँ एक मुद्दा मिल गया है। ईश्वर को गलत साबित करना प्रतिकूल है। आप जानते हैं, अंत में यह कुछ ऐसा है जो उस पूरे विकल्प के बारे में असंतोषजनक होगा।

तब हम पाते हैं कि अय्यूब बहुत गहराई से चाहता है कि कोई वकील या मध्यस्थ उसकी सहायता के लिए आए। यह बल्कि विडम्बना है कि वह स्वर्ग के उस दृश्य के बारे में नहीं जानता जब यह वास्तव में स्वर्गीय अदालत का एक सदस्य था जो भगवान के सामने आया था जिसने इस पूरी प्रक्रिया को शुरू किया था। एक वकील पहले ही शामिल हो चुका है, चैलेंजर, लेकिन वह भगवान की नीतियों को चुनौती दे रहा था, और इसने अय्यूब को इस समस्या में डाल दिया। नौकरी से दूसरी नौकरी मिलने की संभावना नहीं है। अगर जीत भी पाया तो जीत नहीं सका. यदि किसी संयोग से वह जीत भी गया, तो परिणाम विनाशकारी होगा क्योंकि यदि अय्यूब ईश्वर के बारे में सही है और एक मध्यस्थ की मदद से, वह ईश्वर को गलत स्वीकार करने के लिए मजबूर करता है, तो ईश्वर पूजा के योग्य नहीं

रह जाता है। यदि अय्यूब इस रणनीति का उपयोग करता है और जीतता है, तो भगवान हार जाता है।

मुक्तिदाता [गोयल] यीशु नहीं है [6:49-8:01]

तो, अय्यूब 19.25 से 27 में हमारे पास क्या है? बहुत से लोगों ने "उद्धारक" शब्द सुना है। और विशेषकर जब वे इसे कुछ अनुवादों में बड़े अक्षरों में देखते हैं, तो वे मान लेते हैं कि मुक्तिदाता यीशु हैं। क्योंकि, आखिरकार, हम यीशु को हमारे मुक्तिदाता के रूप में जानते हैं। हिब्रू में बड़े अक्षर नहीं हैं। तो, पूंजीकरण व्याख्या है। और हैंडेल का मसीहा, जितना सुंदर संगीतमय काम है, व्याख्या के लिए हमारा मार्गदर्शक नहीं है।

क्या अय्यूब यीशु जैसे किसी व्यक्ति की आवश्यकता व्यक्त करता है? क्या वह उस तरह का वकील चाहता है? नए नियम का कोई भी लेखक अध्याय 19 में यीशु और अय्यूब के बीच संबंध नहीं बताता है। इसलिए, हमें वास्तव में अय्यूब के संदर्भ में ही काम करने की आवश्यकता है। नए नियम का कोई भी अनुच्छेद या लेखक हमें विस्तृत पूरक व्याख्या नहीं देगा।

गोयल की भूमिका क्षमा नहीं बल्कि प्रतिशोध है [वकील/उद्धारक] [8:01-10:34]

एक *गोयल*, फिर से, इस शब्द का अनुवाद मुक्तिदाता है, एक *गोयल* वह है जो दूसरे की ओर से कानूनी स्थिति में प्रवेश करता है। *गोयल* यही करता है। यदि कोई गलती शामिल है, तो *गोयल* उस व्यक्ति द्वारा किए गए गलत को सही करने के लिए अपनी ओर से शामिल होने के बजाय उस व्यक्ति के साथ किए गए गलत पर अधिकार करता है। एक *गोयल* किसी व्यक्ति के साथ हुए गलत को सही करने का प्रयास कर रहा है। निःसंदेह, यही स्थिति अय्यूब की है। उसे ऐसा लगता है जैसे उसके साथ गलत हुआ है।

कोई भी *व्यक्ति* किसी व्यक्ति द्वारा की गई गलती को सही करने के लिए काम नहीं करता है। यीशु ने यही किया, लेकिन वास्तव में वह वह भूमिका नहीं है जो हम पाते हैं। अय्यूब यहां एक वकील, एक *गोयल* और मुक्तिदाता चाहता है, जो प्रदर्शित करेगा कि वह निर्दोष है। वह अपने द्वारा किए गए अपराधों से बचाने के लिए किसी की तलाश नहीं कर रहा है। वह इस बात से सहमत है कि

उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया है जो उसे मिले व्यवहार के लायक हो। वह अपराधों से बचाने के लिए किसी की तलाश नहीं कर रहा है। यदि वह अपराध स्वीकार कर लेता है, तो खेल हार जाता है। वह यह रिकार्ड करना चाहता है कि उसने ऐसा कुछ नहीं किया जिससे उसे कष्ट सहना पड़े; यह मुक्तिदाता की भूमिका नहीं है जो यीशु निभाते हैं। वास्तव में, यह विपरीत है। अय्यूब आश्चर्य है कि उसका *गोयल* जीवित है। "मुझे पता है कि मेरा *गोयल* जीवित है।"

यह यीशु के पुनरुत्थान के बारे में कुछ नहीं है। वह अभी अय्यूब के लिए जीता है। अय्यूब को इसी बात का यकीन है। और वह *गोयल* स्टैंड लेगा। इस क्रिया का प्रयोग साहित्यिक अर्थ में किसी की गवाही देने के लिए किया जाता है। वह मेरी ओर से गवाही देगा। उसे उम्मीद है कि *गोयल* उसके गोबर के ढेर पर पहुंचेगा। यह वह धूल है जिसका यहाँ उल्लेख है। इसलिए उन्हें उम्मीद है कि वकील यहां आएंगे।

फिर भी मेरे शरीर में [10:34-12:27]

तो, इस विचार की तीन व्याख्याएँ कि "मेरी त्वचा नष्ट हो जाने के बाद भी मैं अपने शरीर में ईश्वर को देखूँगा।" कुछ लोग सोचते हैं कि अय्यूब पुनरुत्थान की आशा करता है। पुराने नियम में कहीं भी ऐसा कुछ नहीं है जो इस प्रकार की अपेक्षा का समर्थन करता हो। कुछ लोग सोचते हैं कि अय्यूब मरणोपरांत पुष्टि की अपेक्षा करता है। मेरे जाने के बाद भी, किसी भी तरह, मुझे दोषमुक्त किया जाएगा। अन्य लोग सोचते हैं कि अय्यूब को अंतिम समय में राहत मिलने की उम्मीद है। मैं अपनी व्याख्या में इसी दिशा में जाता हूँ। जब वह "मेरी त्वचा नष्ट हो जाने के बाद" के बारे में बात करता है, तो मुझे लगता है कि वह अपनी त्वचा के उधड़ने की बात कर रहा है, जैसा कि वह बर्तन के टुकड़े से अपनी त्वचा को खुरचने के लिए करता है।

इसलिए, यह सब खत्म हो जाने के बाद भी, अगर मैं यहां बैठूँ, अपने आप को सहलाता रहूँ, जब तक कि "मेरे शरीर में" सब कुछ खत्म न हो जाए, मैं भगवान को देखूँगा। इसका मतलब है कि मैं परमेश्वर के अनुग्रह में पुनः स्थापित हो जाऊँगा। ईश्वर को देखने का अर्थ है उसके अनुग्रह को पुनः प्राप्त करना। हालाँकि उसकी त्वचा चली गई है, यह अतिशयोक्ति है; वह इसे कुरेद रहा है, वह देह में परमेश्वर की पुनर्स्थापना देखेगा। मरने से पहले त्वचा/मांस को बहुत अच्छे से तैयार किया गया।

अय्यूब को स्वर्ग की कोई आशा नहीं है। ईश्वर को देखने का तात्पर्य अनुग्रह पुनः प्राप्त होने से है और वह अब अजनबी, बाहरी व्यक्ति, अनुग्रह से बाहर नहीं रहेगा।

सारांश व्याख्या [12:27-13:08]

तो, मैं इसे इस तरह से समझाऊंगा। मेरा दृढ़ विश्वास है कि कोई है, शायद दैवीय परिषद से, लेकिन अनिर्दिष्ट, कोई है जो आएगा और इस सब के अंत में यहीं मेरे गोबर के ढेर पर मेरी ओर से गवाही देगा। मेरी छिलती त्वचा के बावजूद, मैं उम्मीद करता हूँ कि मेरे शरीर में भगवान के सामने आने के लिए काफी कुछ बचा हुआ है। मैं उसके अनुग्रह में पुनः स्थापित हो जाऊँगा और अब मेरे साथ अजनबी जैसा व्यवहार नहीं किया जाएगा। यह मेरी गहरी इच्छा है; वैसे समृद्धि का इससे कोई लेना-देना नहीं है।

अय्यूब की पुष्टि: प्रतिशोध, क्षमा नहीं [13:08-14:03]

यह अय्यूब की ओर से एक महत्वपूर्ण पुष्टि है। जब हम मुक्तिदाता को यीशु बनाने का प्रयास करते हैं तो हम इसे पूरी तरह से चूक जाते हैं। यीशु हमारा मुक्तिदाता है, लेकिन वह उस तरह का मुक्तिदाता नहीं है जिसे अय्यूब यहां तलाश रहा है। इसलिए, अय्यूब किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में नहीं है जो उसके अपराधों की सज़ा उठाए और उसे सही ठहराए। वह औचित्य की नहीं, बल्कि पुष्टि की तलाश में है। वह नहीं सोचता कि वह किसी ऐसी सजा का हकदार है जो कोई और उन्हें दे। दृढ़तापूर्वक पुष्टि कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो यीशु प्रदान करता है। अय्यूब किसी ऐसे व्यक्ति से ऐसी भूमिका निभाने की उम्मीद कर रहा है जो यीशु द्वारा निभाई गई भूमिका के बिल्कुल विपरीत हो।

यीशु अय्यूब का गोयल नहीं है [14:03-14:58]

अय्यूब में यीशु को गोयल के रूप में देखना पुस्तक की व्याख्या में एक विकृत कारक है और अय्यूब की आशा और इच्छा के विरुद्ध है। यीशु अय्यूब की पुस्तक में प्रस्तुत समस्याओं का उत्तर नहीं है, हालाँकि वह पाप और दुनिया की टूटन की बड़ी समस्या का उत्तर है। यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान हमारे पापों के लिए मध्यस्थता करते हैं लेकिन इस बात का उत्तर नहीं देते हैं कि दुनिया में पीड़ा क्यों है या जीवन में गलतियाँ होने पर हमें ईश्वर के बारे में कैसे सोचना चाहिए। अय्यूब की

पुस्तक यही करती है, और हमें पुस्तक के साथ इस तरह व्यवहार करना होगा कि हम उसके पन्नों में मौजूद संदेश को समझ सकें।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 15 है। कार्य 19.25।
[14:58]